संगीत का संक्षिप्त इतिहास

संगीत को आदिकाल से आज तक तीन भागों में बाँटा जा सकता है :-

(1) प्राचीन काल (2) मध्यकाल (3) आधुनिक काल

(1) प्राचीन काल – आदि काल से 800 ई० तक

(2) मध्य काल – 800 ई० से 1900 ई० तक

(3) आधुनिक काल – 1900 ई० से आज तक

प्राचीन काल का प्रारंभ आदिकाल में चारों वेदों की रचना के साथ माना जाता है। वेदों में सामवेद प्रारम्भ से अन्त तक संगीतमय रहा। इसके मंत्रों का पाठ आज भी संगीतमय होता है।

साम गायन में केवल तीन स्वर **स्वरित** (सा, म, प) **उदात्त** (ग, नि) **अनुदात्त** (रे, ध) होते थे।

धीरे-धीरे स्वरों की संख्या में भी विकास हुआ। महाभारत में सात स्वरों तथा गंधार गान की चर्चा मिलती है। कनिष्क काल के उपरान्त 200-400 ई० में भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र संगीत के लिए काफी उपयोगी पुस्तक है। मतंग मुनि कृत वृहद्देशी तीसरी से छठी शताब्दी के बीच की रचना मानी जाती है, जिसमें सबसे पहले 'राग' शब्द की चर्चा हुई। नारद द्वारा लिखित नारदीय शिक्षा 10वीं-12वीं ई० के बीच लिखी गई। इस प्रकार प्राचीन काल का संगीत काफी समृद्ध था।

मध्यकाल में राग गायन की तरह प्रबंध गायन की परम्परा थी। 8वीं से 19वीं तक के समय को प्रबंध काल भी कहते है। यह संगीत का स्वर्ण काल था। राज्य की ओर से संगीतकारों को आश्रय तथा तनख्वाह मिलती थी। 11वीं शताब्दी में मुसलमानों के आक्रमण के बाद उनकी सभ्यता-संस्कृति का हमारी सभ्यता-संस्कृति पर प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उत्तरी संगीत-दक्षिणी संगीत दोनों अलग-अलग होने लगे। उत्तर भारतीय संगीत पर मुसलमानों के संगीत का प्रभाव पड़ने लगा।

आइने अकबरी के अनुसार अकबर के दरबार में छत्तीस संगीतज्ञ थे जिनमें तानसेन प्रमुख थे जिन्होंने राग 'दरबारी कान्हड़ा', 'मियां की सारंग', 'मियां मल्हार' इत्यादि राग बनाये। इनके बनाये ध्रुपद आज भी प्रसिद्ध है।

अकबर के समय में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई आदि कवियों ने तथा दक्षिण में पुण्डरीक विठ्ल ने राग माला, राग मंजरी आदि की रचना कर संगीत का विकास किया।

मुगल शासकों में औरंगजेब संगीत का विरोधी था। वह संगीतज्ञों को संगीत छोड़ने पर मजबूर करता था। वाद्ययंत्र जला दिये जाते थे। एक बार एक संगीतज्ञ की अर्थी राजमहल की ओर से जा रही ही थी तो उसने कहा इसे इतनी गहराई में गाड़ दो कि कभी इसकी आवाज सुनाई नहीं दे।

आधुनिक काल – अंग्रेजों को सिर्फ शासन करना था अतः उन्होंने संगीत को कोई क्षति नहीं पहुँचाई। संगीतज्ञ कम थे, वे केवल अपने परिवार के लोगों को ही सिखाते थे। जहाँ सभ्य समाज था वहाँ पर संगीत का नाम लेना पाप समझा जाता था। ऐसे में कुछ संगीतज्ञों ने संगीत को पुनर्जीवित किया। उनमें विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, विष्णु नारायण भातखण्डे बंगाल के सौरेन्द्र मोहन टैगोर ने संगीत का काफी प्रचार-प्रसार किया।

आज का सभ्य समाज इसकी महत्ता को जानते हुए इसके विकास के लिए तत्पर हुआ है। इस क्रम में आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्म तथा विभिन्न चैनलों के माध्यम से इसे जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। संगीत लाखों लोगों के रोजगार का साधन बना है। विद्यालय स्तर पर तथा विश्वविद्यालय स्तर पर इसकी शिक्षा की व्यवस्था की गई है। विभिन्न प्रकार की संस्थाएँ प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ, गंधर्व महाविद्यालय, पूना प्राचीन कला केन्द्र, चंडीगढ़ द्वारा संगीत का प्रचार नई पीढ़ी में किया जा रहा है।

प्रश्न : संगीत का संक्षिप्त इतिहास लिखें।

प्रश्न : संगीत के इतिहास को कितने भागो में बाँट सकते हैं।

◆◆◆